कथक नृत्य में लय और क्रम लयः एक या भिन्न

शैफाली गोयल तायल
शोधार्थी
एम.ए. (कथक नृत्य)
गुरू: श्रीमती नंदिनी सिंह (जयपुर घराना)
डा. भावना ग्रोवर दुआ
शोध निर्देशक
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, परफॉर्मिंग आर्टस् विभाग
स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ

कथक जगत में जब हम गुनों की बात करते है, तब उसे समझने के लिए बहुत जरूरी है, कि हम ताल के चक्र को सही तरह से समझे और उसी रूप में उसे प्रस्तुत करें। यह हम सब बखूबी जानते है, कि किसी भी ताल की पहली मात्रा सम कहलाती है। फिर चाहे वो कोई भी ताल हो तीनताल, झपताल, धमार या एकताल इत्यादि। इसी सम से यह चक्र शुरू होता है और इसी पर समाप्त। अब गुनों की बात कहाँ से शुरू होती है? जहाँ से हम तत्कार की बोलों की बात करते है वहीं से गुनों की बात शुरू होती है। अब तत्कार के बोल कितने है और ताल में मात्राऐं कितनी है उसी पर गुन निर्धारित होंगे।

कथक में अलग–अलग तालें होती है और हर ताल की एक निश्चित तत्कार होती है, जिससे उस ताल का परिचय होता है। समझने के लिए हम तीन ताल की बात करते है। तीन ताल में 16 मात्रा होती है, और उसके तत्कार के बोल आठ होते है। अब गुन कहाँ से बनते है और कैसे बनते है यह हम समझने की कोशिश करते है। ताल के चक्र में हमें तत्कार के बोल बिठाने है, परंतु इस तरह से बिठाने है कि वो एक समान रूप में विभाजित हो। अब एकगुन बनाना है तो हमें एक तीन ताल के चक्र में तत्कार के बोलों की एक आवर्तन बिठानी है तो वो हम कैसे करेंगे? तीन ताल का एक चक्र यानि 16 मात्रा और उसमें एक आवर्तन तत्कार के बोलों का, मतलब 8 बोल। तो 16 मात्रा में 8 बोल समावेश करने है। इसका अर्थ यह हुआ कि एक मात्रा पर एक बोल पढ़ा जाएगा और फिर एक मात्रा छोड़ी जाएगी। इस तरह एक मात्रा पर बोलते हुए और एक छोड़ते हुए एक चक्र पूरा होगा और यह बनेगा हमारा एकगुन। अब दूसरे गुन पर आने के लिए हम तत्कार के बोलों की 2 आवर्तन लेंगे और उसे उसी 16 मात्रा के चक्र में बिठाएंगे। अब क्योंकि यह 2 आवर्तन है तो यह 8 और 8 के 16 बोल हो जाएंगे और 16 मात्रा है, तो इसका मतलब हर मात्रा पर एक बोल आएगा 8, 8 के अनुपात में। यह बना हमारा दोगुन। अब चौगुन में चलते है। चौगुन में, तत्कार के बोलों के 4 आवर्तन हमें तीन ताल के एक चक्र में बिठाने होंगे। इसका मतलब 8 गुना चार यानि 32 बोल 16 मात्रा में बिठाने होंगे। अब 16 मात्रा में 32 बोल बिठाना मतलब हर मात्रा पर 2 बोलों का पढ़ना।

अठगुन में तत्काल के बोलों के 8 आवर्तन, 16 मात्रा में पूरे होने चाहिए। इसका तात्पर्य हुआ कि 16 मात्रा में 8 गुना 8, 64 बोल आने चाहिए। 16 में 64 यानि हर बोल पर 4 बोल आने चाहिए। यह हुआ हमारा अठगुन। इसी प्रकार हमारा 16 गुन भी बनेगा। 16 गुन के लिए 16 आवर्तन तत्कार के बोलों की 16 आवर्तन आएंगी यानि 16 गुना 8, 128 बोल। इतनी बड़ी संख्या। अब इतने बोलों को 16 मात्रा में बिठाना है। इन 128 बोलों को 16 में अगर विभाजित करेंगे तो हर मात्रा पर 8 बोल आएंगे। इस तरह हमारा आखिरी गुन16 गुन बनेगा। इस पूरी प्रक्रिया से हम यह निष्कर्ष निकालते है कि अगर एकगुन है तो 2 मात्रा में एक बोल आएगा। दो गुन में 2 मात्रा में दो बोल। चौगुन में दो मात्रा में 4 बोल। अठगुन में 2 मात्रा में 8 बोल और 16 गुन में 2 मात्रा में 16 बोल। उदाहरण के लिए इस तरह तीन ताल में गुन बनायें जायेंगे–

तीनताल – 16 मात्रा

चौगुन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	1
ता	थेई	आ	थेई	ता	थेई	आ	थेई	ता	थेई	आ	थेई	ता	थेई	आ	थेई	ता
थेई	तत	थेई	तत	थेई	तत	थेई	तत	थेई	तत	थेई	तत	थेई	तत	थेई	तत	
x				2				0				3				x

अठगुन

1	2	3	4	5	6	7	8
ता थेई	आ थेई	ता थेई	आ थेई	ता थेई	आ थेई	ता थेई	आ थेई
थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत
x				2			

9	10	11	12	13	14	15	16	1
ता थेई	आ थेई	ता थेई	आ थेई	ता थेई	आ थेई	ता थेई	आ थेई	ता
थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत	थेई तत	
0				3				x

सोलहगुन

1	2	3	4
ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत
आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत
x			

5	6	7	8
ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत
आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत
2			

9	10	11	12
ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत
आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत
0			

13	14	15	16	1
ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत	ता थेई थेई तत	ता
आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत	आ थेई थेई तत	
3				x

अब कुछ बातें हमें ध्यान में रखनी चाहिए। वो यह है कि जिस लय में हमने गुन बनाये है वो कौन–सी लय है और क्या वो लय समान रूप से चल रही है, या वो भी बढ़ रही है। जी हाँ इन बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है, अपितु गुन का महत्व और प्रस्तुति ही गलत हो जायेगी। गुन को प्रस्तुत करने के लिए ताल हमेशा विलंबित लय ही होनी चाहिए और फिर उसी पर गुन बनने चाहिए। लय बीच में कहीं भी नहीं बदलनी चाहिए। यह एक ही रहती है।

एकगुन से लेकर 16 गुन तक जाना, यह पूरा क्रम, क्रम लय कहलाता है।

क्रम इसीलिए क्योंकि यह क्रम से बढ़ता है, 1 से 2, 2 से 3, 3 से 4, 4 से 5, 5 से 6, 6 से 7, 7 से 8 इत्यादि 16 तक। और लय इसीलिए क्योंकि क्रम से बढ़ने के कारण बोलों की लय भी धीरे–धीरे अपने आप बढ़ने लगती है। परंतु अक्सर लोग इसे लय से मिला देते हैं।

क्रम लय और लय एक या भिन्न?

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या क्रम लय और लय एक ही बात है? काफी लोग अक्सर यह भूल कर जाते है कि यह दोनों एक ही है। दोनों में बहुत भेद है। क्रम लय में लय विलंबित रहती है और उसके ऊपर सारे गुन बनाये जाते है परंतु जब लय बनती है, तब जिस लय पर सारी बंदिशें पढ़ी जाती है, लय बढ़ने के साथ वो वाली बंदिशों की लय भी बदल जाती है। ताल भी दुगनी गति से बढ़ जाती है और साथ ही बोल भी बढ़ जाते है। उसको इस तरह से समझ सकते है जिस प्रकार एक रेल समान गति से चलती हो और पहली वाली को समान गति से रखते हुए दूसरी रेल अलग–अलग गति से चलती हो, तो एक के अनुपात में दूसरे की गति बदलती जाएगी। इस प्रक्रिया में, जिसमें एक की गति स्थिर रहे और दूसरे की बढ़ती जाये वो क्रम लय है। अब दूसरा रूप लय का देखते है, इसमें भी दो रेल है जो स्थिर गति से चल रही है परंतु दूसरी भी उतनी ही गति से चल रही है। इस स्थिति में क्योंकि दोनों एक ही लय से बढ़ रही है, दोनों के बीच में गति का कोई भेद नहीं है। इसी प्रकार लय में ताल और बोलों में कोई भेद नहीं आता है। अगर एक मात्रा में एक बोल आता है तो एक ही बोल रहेगा वो बढ़ेगा या घटेगा नहीं। परंतु यही अगर क्रम लय होगी, तो गुन के साथ एक ही ताल में हर मात्रा पर बोलों की संख्या बदलती जाएगी।

दूसरा भेद यह है कि क्रम लय में सर्वदा तत्कार के बोल ही प्रयोग किए जाते है। वो नहीं प्रयोग होंगे तो उसका अर्थ ही खत्म हो जाएगा। क्योंकि गुन बताते ही यही है कि कितनी मात्रा पर कितने बोल आएंगे। दूसरी तरफ लय में केवल ठेके के बोलों का प्रयोग किया जाता है, तत्कार के बोलों का नहीं। इस तरह लय और क्रम लय समान लगते हुए भी बिल्कुल भिन्न है।

शब्द संकेत : लय, ताल, मात्रा, आवर्तन, गुन, क्रम लय, विलंबित लय, ठेका

शोध लेख उद्देश्य एवं महत्व

मेरे इस शोध का उद्देश्य यह है कि जितने भी साधक, इस कला को, साध रहे है, वो गहराई से इस बारीकी को समझे, कि क्रम लय और लय एक नहीं अपितु भिन्न है। आज 5 साल हो गये है मुझे कथक सिखाते हुए परंतु 8 साल बाद भी सीखे हुए साधक गुनों के परिचय से अंजान है। उन्हें केवल रटा हुआ है लेकिन इसके पीछे क्या मर्म है, क्या तर्क है, कैसे बनते है, इसका ज्ञान शायद ही किसी के पास है। इस विषय के बारे में ज्यादा ज्ञान किसी पुस्तक में भी नहीं मिलता है जो साफ–साफ इस तर्क को समझाता हो। तो इस ज्ञान से कोई वंचित न रहे उसके लिए यह एक प्रयास है। आशा करती हूँ यह प्रयास सार्थक रहेगा और सभी कथक साधिकाओं–साधक के लिए लाभकारी रहेगा।

संदर्भ संकेत

- मांडवी सिंह, लयकारी, कथक परम्परा, दिल्ली, स्वाति प्रकाशन, 2010.
- माधवी सिंह, तत्कार, कथक परम्परा, दिल्ली, स्वाति प्रकाशन, 2010.
- डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग, नृत्य में गणित का स्थान, कथक नृत्य, हाथरस, सातवां संस्करण, संगीत कार्यालय, 2006.
- डॉ. हरिशचंद्र श्रीवास्तवा, लयकारी, कथक नृत्य परिचय, इलाहाबाद, संगीत सदन प्रकाशन, संस्करण–पन्द्रहवां, 2003.